सूरजपाल चौहान नहीं रहे, उनकी यह कविता जरूर पढ़िए

जनकवि सूरजपाल चौहान का निधन 15 जून 2021 को हुआ। 20 अप्रैल 1955 को कुरावली गांव अलीगढ़ में उनका जन्म हुआ था।.वह कवि के अलावा कहानीकार भी थे। उन्हें सवर्ण साहित्य के वर्चस्ववाद के बरक्स प्रखर दलित स्वर हमेशा माना गया। उनकी कविताओं और कहानियों में इसकी झलक बराबर मिलती रही।

सूरजपाल चौहान भारत सरकार के एक उपक्रम में प्रबंधक (प्रशासन) के पद पर कार्यरत थे। उनके पिता रेलवे स्टेशन पर मजदूरी करते थे और माँ ठाकुरों के घरों में काम करती थीं। लेकिन उनके मजदूर पिता ने उनकी शिक्षा पर ध्यान दिया। स्कूली जीवन में ही वे कविताएँ लिखने लगे थे। 'प्रयास', 'क्यों विश्वास करूँ' 'वह दिन जरूर आएगा' और 'कब होगा भोर' उनके प्रकाशित कविता संग्रह हैं। नब्बे के दशक में हिन्दी में दलित साहित्य का जो उभार आया, सूरजपाल सिंह चौहान उसके प्रमुख रचनाकारों में गिने जाते हैं। उनकी आत्मकथा 'तिरस्कृत' और 'संतप्त' काफी चर्चित रही।

उनकी कविता 'ये दलितों की बस्ती है' उन्हीं विडंबनाओं का यथार्थ प्रस्तुत करती है। वे दिखाते हैं कि दलित समुदाय के लोग शराब के नशे में डूबे हुए हैं, उन पर ब्राह्मणवादी अंधआस्थाओं का गहरा असर है, दलितों के बीच भी एका का अभाव है। उन्होंने लिखा है- ''बेटा बजरंग दल में है,/ बाप बना भगवाधारी/ भैया हिन्दू परिषद में हैं,/ बीजेपी में महतारी/ मंदिर-मस्जिद में गोली/ इनके कंधे से चलती है..''। उनके बीच नकली बौद्धों की मौजूदगी, अंबेडकर से दूरी और दलित समुदाय से आने वाले अफसरों द्वारा अपने ही समुदाय की उपेक्षा आदि की आलोचना भी वे करते हैं। वे खुद को भी आलोचना के दायरे में लाने से नहीं चूकते- ''मैं भी लिखना सीख गया हूँ/ गीत कहानी और कविता/ इनके दुख दर्द की बातें/ मैं भी भला, कहाँ लिखता/ कैसे समझाऊँ अपने लोगों को/ चिंता यही खटकती है।'' ऐसे ही भाव उनकी कविता 'भीमराव का दलित नहीं यह गांधी जी का हरिजन है' में भी व्यक्त हुआ है।

यह दलितों की बस्ती है
बोतल महँगी है तो क्या,
थैली बहुत ही सस्ती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

ब्रह्मा विष्णु इनके घर में,
क़दम-क़दम पर जय श्रीराम ।
रात जगाते शेरोंवाली की...
करते कथा सत्यनाराण..।
पुरखों को जिसने मारा था,
उनकी ही कैसिट बजती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

तू चूहड़ा और मैं चमार हूँ,
ये खटीक और वो कोली ।
एक तो हम कभी हो ना पाए,
बन गई जगह-जगह टोली ।
अपने मुक्तिदाता को भूले,
गैरों की झाँकी सजती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

हर महीने वृन्दावन दौड़े,
माता वैष्णो छह-छह बार ।
गुडगाँवा की जोत लगाता,
सोमनाथ को अब तैयार ।
बेटी इसकी चार साल से,
दसवीं में ही पढ़ती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

बेटा बजरँगी दल में है,
बाप बना भगवाधारी
भैया हिन्दू परिषद में है,
बीजेपी में महतारी ।
मन्दिर-मस्जिद में गोली,
इनके कन्धे से चलती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

शुक्रवार को चौंसर बढ़ती,
सोमवार को मुख लहरी ।
विलियम पीती मंगलवार को,
शनिवार को नित ज़हरी ।
नौ दुर्गे में इसी बस्ती में,
घर-घर ढोलक बजती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

नकली बौद्धों की भी सुन लो,
कथनी करनी में अन्तर ।
बात करें हैं बौद्ध धर्म की,
घर में पढ़ें वेद मन्तर ।
बाबा साहेब की तस्वीर लगाते,
इनकी मैया मरती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

औरों के त्यौहार मनाकर,
व्यर्थ खुशी मनाते हैं ।
हत्यारों को ईश मानकर,
गीत उन्हीं के गाते है ।
चौदह अप्रैल को बाबा
साहेब की जयन्ती,
याद ना इनको रहती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

डोरीलाल है इसी बस्ती का,
कोटे से अफ़सर बन बैठा।
उसको इनकी क्या चिन्ता अब,
दूजों में घुसकर जा बैठा ।
बेटा पढ़कर शर्माजी, और
बेटी बनी अवस्थी है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

भूल गए अपने पुरखों को,
महामही इन्हें याद नहीं ।
अम्बेडकर, बिरसा , बुद्ध,
वीर ऊदल की याद नहीं ।
झलकारी को ये क्या जानें,
इनकी वह क्या लगती है ।
ये दलितो की बस्ती है ।।

मैं भी लिखना सीख गया हूँ,
गीत कहानी और कविता ।
इनके दुःख दर्द की बातें,
मैं भी भला था, कहाँ लिखता ।
कैसे समझाऊँ अपने लोगों को ,
चिन्ता यही खटकती है ।
ये दलितों की बस्ती है।।

जब हमारे गांव में आया जादूगर

मोनिस रहमान

हमारे गाँव में एक बार एक जादूगर आया! गांव मे उसके नाम के परचे लग गये! उसपर लिखा था, दुनिया बनने से लेकर अबतक कोई इस मुक़ाबले का जादूगर नही आया, अगर कहीं इसकी टक्कर का जादूगर मिल जाये तो, पाँच हज़ार रूपये का ईनाम दिया जायेगा ! लोगो में उसे देखने की उत्सुकता बढ़ गयी ! लोग यह सोचकर जाने का सोचने लगे कि, जादू अगर अच्छा ना हूँ तो पाँच हज़ार जीतने का दावा तो कर ही देंगे ! पूरे गाँव में रिक्शा से ऐलान कराया गया कि जुमे को शाम चार बजे जादूगर अपना जादू दिखायेगा, और बस वो एक ही बार जादू दिखायेगा !

जुमे को दोपहर से ही राम लीला मैदान में लोगों की भीड़ लगनी शुरू हो गयी, लोग जादूगर को नज़दीक से देखना चाहते थे! इसी उधेड़ बुम में शाम के चार बज गये! लोगो में उत्सुकता और बढ़ गयी, लोगो के लिये सबर करना मुश्किल हो गया, सवा चार बजे पर जादूगर का कोई अता पता नही, लोगो ने शोर मचाना शुरू कर दिया! साढ़े चार बजे जादूगर स्टेज पर आया! औरो लोगो से शांत रहने की अपील की, जादूगर नें माईक पकड़ा और ज़ोर से बोला "अच्छे दिन आने वाले हैं" पूरे मैदान में एक दम सन्नाटा हो गया ! फिर उसने अपने झोले से पाँच सौ और हज़ार के नोट निकाले और फाड़ दिये, सब लोगो ने अपनी अपनी जेबों से पाँच सौ और हज़ार के नोट निकालकर फाड़ने शुरू कर दिये, तभी भीड़ में से लड़डन बोला अरे यह क्या कर रहें हैं, ऐसे तो पूरे

गांव में लोगो के पास पैसे नहीं बचेंगे ! सब लोग लड्डन को देखने लगे, तभी जादूगर बोला कि तुम यहाँ नोट फाड़ो कल को मैं तुम सबको नये नोट दूँगा, फिर लड्डन बोला उसके लिये तो बेवजह लाईन में लगना पड़ेगा! तब जादूगर बोला कि देशद्रोही वहाँ जवान धूप और गर्मी में बॉर्डर पर खड़ा है तू लाईन में खड़ा नही हो सकता ? सब लोगो को जादूगर की बात पसंद आई उन्होंने जादूगर की हाँ में हाँ मिलाई ! और उस बेचारे लड्डन को चुप होना पड़ा !

फिर जादूगर ने अपना झोला खोला, उसमें से एक काग़ज़ निकालकर बोला, एक देश एक टैक्स "जीएसटी जिन्दाबाद" लोगो ने ज़ोर से नारे लगाने शुरू कर दिये "अच्छे दिन आयेंगे ! लड्डन ने कुछ बोलना चाहा तो लोगो ने कहना शुरू कर दिया "देशद्रोही-देशद्रोही" लड्डन को फिर चुप हो जाना पड़ा ! फिर वो जादूगर एक के बाद एक जादू दिखाने लगा ! लोग ज़ोर ज़ोर से उसका गुणगान करने लगे ! लोगो ने कहा कि वाकई उन्होने इतना बेहतरीन जादूगर आजतक नहीं देखा ! लोगो ने कहा यह दुनिया का सबसे बड़ा जादूगर है ! अब आसपास के गाँव के जादूगरों को इसके सामने घुटने टेकने पड़ेंगे!

अब जादूगर ने एक बार फिर अपना झोला खोला इस बार झोले में से मक्खियाँ निकली और लोगो को काटने लगीं ! लोगो को सांस लेने में दिक्क़त होने लगी! और लोग मरने लगे! लोगो को लगा कि वो सब मर जायेंगे! तो वो भड़क गये जादूगर को गालियाँ देने लगे ! जादूगर ने देखा कि उसकी थू-थू हो रही है ! तो वो ज़ोर ज़ोर से रोने लगा! लोगो को लगा जादूगर को अफ़सोस है! वो फिर से जादूगर के साथ खड़े हो गये! जादूगर ने एक बार फिर झोले में हाथ डाला, और लोगो को बीस लाख करोड़ रूपयों की झलक दिखाई ! लोग ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे "जादूगर है तो मुम्किन है" ! जादूगर ने सबसे कहा कि वो अपनी आँखे बंद करें ! इन रूपयों में से आपका जो हिस्सा होगा वो अपने आप आपकी जेब में चला जायेगा !

सब लोगों ने आँखें बंद कर ली जादूगर ने सब लोगो की जेबों सें रूपये, मोबाइल और क़ीमती समान निकाल लिया! और अपना झोला ऊठाया और चल पड़ा ! वहीं थोड़ी दूर पर लड्डन खां यह सब देखकर मुस्कुरा रहे थे!

देशहित की खुराक और देश का युवा

देवेन्द्र भाले

भारत "युवाओं" का देश है। एक सर्वे के अनुसार भारत की आबादी की औसत आयु 29 वर्ष है अर्थात दुनिया का सब से युवा देश। ये बात अलग है कि इस युवा देश के लगभग सभी "नेता" 70 पार है। लेकिन युवा को इस की परवाह नही युवा अपने रास्ते खुद बनाता है। युवा ने देश चलाने के लिए अपनी "मनपसंद सरकार" निर्वाचित कर ली है।

अब चूकिं युवा ने सरकार बनाई है इसीलिए सरकार को भी युवा की बहुत परवाह है। सरकार नही चाहती युवा मेहनत कर के दर-2 की ठोकर खाये। उस को सुबह जल्दी उठ कर काम पर जाना पड़े और सारे दिन माथा पच्ची करनी पड़े। इसीलिए सरकार ने सब से पहले "रोजगार" के सारे अवसर खत्म कर दिए। रोजगार है ही नही तो युवा के घर वाले उस को जबर्दस्ती कहीं भेज भी नही सकते, युवा अब घर पर आराम करता है।

लेकिन अब एक और समस्या खड़ी हो गई। भगवान के इंसान को बनाते समय एक manufacturing defect रह गया। इंसान ज्यादा देर खाली नही बैठ सकता, उस को करने के लिए कुछ न कुछ चाहिए। युवा को भी खाली बैठे-2 दिक्कत आने लग गई। अब सरकार चूंकि युवाओं के कल्याण के लिए बनाई गई थी इसीलिए सरकार ने अपने "परम मित्र" की मदद से युवा को रोज का 1 जीबी डाटा मुफ्त में देना शुरू कर दिया, युवा खुश हो गया। अब युवा सोशल मीडिया पर पहुंच गया। वहां जा कर युवा को पता चला कि उस का "धर्म" और "जाति" कितने बड़े सकंट में है। भगवान का लाख-2 शुक्र है कि वो उस के "धर्म और जाति" की रक्षा के लिए सही समय पर "सोशल मीडिया" पर पहुंच गया नही तो ये लोग खत्म ही कर देते सब कुछ। अब युवा को रंगों की समझ भी हो गई। उस को, उस के जैसे ही युवाओं ने उस का एक विशेष रंग दे दिया। किसी का नीला, किसी का हरा, किसी का लाल तो किसी का भगवा। युवा को एहसास हो गया कि सिर्फ उस के रंग

वाले लोग ही उस की जाति के और उसके धर्म के परम हितेषी है, बाकी सब उस के दुश्मन है। युवा को अब अपना रंग बचाने का अति महत्वपूर्ण काम मिल चुका है। युवा सुबह उठता है और अपने जैसे बाकि युवाओं के साथ मिलकर अपने धर्म की रक्षा में जुट जाता है। उस का काम है अपने जैसे बाकि युवाओं को उसके रंग की पहचान कराना, उनको अपनी पहचान करवाना। उनको, उन के गौरवशाली इतिहास से परिचित करवाना, उनको उन पर हुए जुल्म का इल्म करवाना।

"हिन्दू युवाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे सभी मुस्लिम देश का बुरा सोचते है? कैसे सदियों से उन्होंने हिन्दू धर्म को हानि पहुंचाई है? कैसे देश के हित मे उन सब को बाहर निकालना जरूरी है?

"मुस्लिम युवाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे उन्होंने सदियों तक देश पर हुकूमत की है? कैसे हिन्दू उन पर अत्याचार कर रहे है? इस्लाम के हित मे "गजवा ए हिन्द" होना कितना जरूरी है? "सवर्ण युवाओं" को समझाया जा रहा है कि कैसे "दलित", आरक्षण ले कर बिना प्रतिभा ऊंची-2 नौकरी पा रहे है ? और कैसे उन की वजह से उन को प्रतिभा होते हुए भी नौकरी नही मिल पा रही है।

"दलितों" को इतिहास बताया जा रहा है कि कैसे उनका सदियों से शोषण किया गया? कैसे वो "मूलनिवासी" है ? और "सवर्ण", बाहर से आये हुए है और उन सब के दुश्मन है।

"महिलाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे शुरुआत से ही पुरुषों ने उन का शोषण किया है ? कैसे सभी पुरुष गंदी सोच वाले, दुर्बुद्धि और परपीड़क होते है ? और महिलाएं कभी भी गलत नही होती है। "नारीवाद" ही महिलाओ की उन्नति का एकमात्र रास्ता है।

अब युवा के पास अपना एक "वाद" है, जिसकी रक्षा उसे करनी है। उस की विचारधारा को ना मानने वाले सभी उस के दुश्मन है। युवा ने देखा कि ऐसे संकटपूर्ण समय मे भी जब उस की "जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र" पर इतना बड़ा संकट आया हुआ है। तब भी कुछ बेकार लोग "शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार" जैसी महत्वहीन बाते कर रहे है। युवा समझ गया है कि ये लोग भी देश के दुश्मन ही है।

अब युवा सुबह से शाम तक अपने धर्म की रक्षा में लगा रहता है। युवा "इतिहासज्ञ" है, युवा को चाहे अपने "पिता के दादा" का नाम नही पता हो। लेकिन युवा को पता है कि 800 साल पहले उस के वर्ग के साथ किन लोगों ने गलत किया जिसका बदला उसे लेना है।

युवा चाहे अपने "पड़ोसी का नाम" भी नही जानता हो लेकिन युवा "विदेश नीति" में विशेषज्ञों को भी गलत साबित कर सकता है। युवा को चाहे "सौंफ और जीरे" में फर्क नही पता हो लेकिन युवा "कृषि विशेषज्ञ" है। युवा से चाहे बगल में बैठी हुई "मक्खी" भी नही डरती हो लेकिन युवा सोशल मीडिया पर "चीन और पाकिस्तान" की अक्ल ठिकाने लगाने की बाते करता है। युवा के पिता चाहे खून-पसीने से मेहनत करके जैसे-तैसे उस का पेट पाल रहे हो लेकिन युवा "पेट्रोल में 15 रुपये बढ़ने के लिए PM बदल दे क्या? शेर पाला है थोड़ा महंगा तो पड़ेगा ही" वाले पोस्ट शेयर कर रहा है।

कुल-मिला कर युवाओं कि सरकार ने युवा के लिए स्वर्ग का निर्माण कर दिया है। सारे दिन कोई काम के लिए नही कहता है। अपनी कुंठाओ को सोशल मीडिया पर किसी को भी गाली देकर निकाल सकता है। साथ ही जाति/धर्म की रक्षा हो रही है वो अलग और क्या चाहिए जीवन में?